इकाई – II

4 प्रकृति की सीख

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।

–श्री हरिवंशराय बच्चन

प्रश्न

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. इस दृश्य से क्या प्रेरणा मिलती है?
3. 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।' भाव स्पष्ट कीजिए।

उद्देश्य

प्रकृति के कण-कण में कुछ न कुछ संदेश छिपा होता है। ये पर्वत, नदियाँ, झरने, पेड़ आदि हमसे कुछ कहते हैं। इनके संदेशों से हम जीवन सफल बना सकते हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
2. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
3. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

© SCERT not to be republished

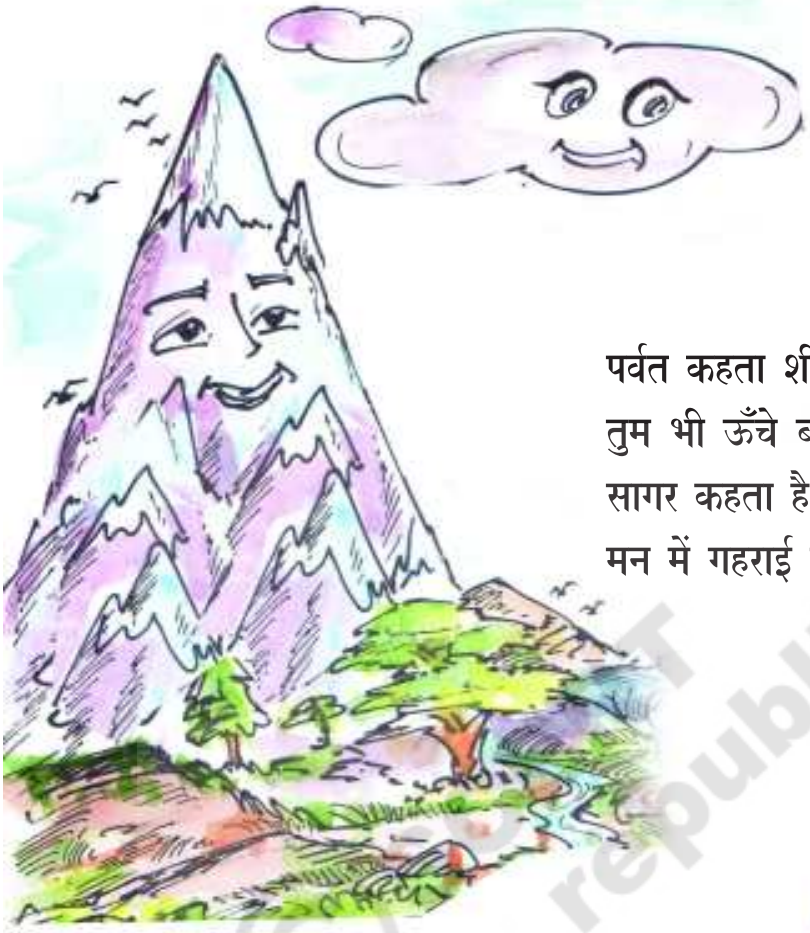

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है,
उठ-उठ गिर कर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठे-मीठे मृदुल उमंग।।

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।।

कवि : सोहनलाल द्विवेदी
जीवनकाल : 1906-1988
प्रसिद्ध रचना : सेवाग्राम
पुरस्कार : पद्मश्री

© NCERT not to be republished

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. नदियाँ खेती के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं?
2. ऋतुओं के नियंत्रण में पर्वत कैसे सहायक होते हैं?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास-कार्य कीजिए।

- **कविता के आधार पर उचित क्रम दीजिए।**

1. सागर कहता है लहरा कर। ( )
2. पर्वत कहता है शीश उठाकर। (1)
3. मन में गहराई लाओ। ( )
4. तुम भी ऊँचे बन जाओ। ( )

- **स्तंभ 'क' को स्तंभ 'ख' से जोड़िए और उसका भाव बताइए।**

क	ख	
पर्वत	धैर्य न छोड़ो	उदाः धैर्यवान बनना।
सागर	ढक लो तुम सारा संसार	.....
तरंग	गहराई लाओ	.....
पृथ्वी	हृदय में उमंग भर लो	.....
नभ	ऊँचे बन जाओ	.....

- **पद्यांश पढ़िए। अब इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

भई सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ।
भई पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ।
यह आदमी जो सोया पड़ा है
जो सच से बेखबर
सपनों में खोया पड़ा है,
भई पंछी इनके कानों पर चिल्लाओ
भई सूरज
जरा इस आदमी को जगाओ।

प्रश्न 1. सूरज के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. कवि ने सूरज, पंछी, हवा से क्या कहा?
3. वास्तव में जगने का क्या तात्पर्य है?

© NCERT not to be republished

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. पर्वत क्या संदेश दे रहा है?
2. तरंग क्या कहती है?
3. संसार को ढक लेने की सीख कौन दे रहा है?

(आ) कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) कविता के भाव से सूक्ति लिखिए।

(ई) नीचे दी गई पंक्तियों के आधार पर छोटी-सी कविता लिखिए।

हरियाली कहती .....।
महकते फूल कहते .....।
चहचहाते पक्षी कहते .....।
बहती नदियाँ कहतीं .....।

भाषा की बात

(अ) पाठ में आये पुनरुक्त शब्द रेखांकित कीजिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।

जैसे : मीठी-मीठी - बच्चे मीठी-मीठी बातें करते हैं।

(आ) विपरीत अर्थ लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।

जैसे : न्याय - हमें अन्याय का विरोध करना चाहिए।

(धैर्य, हिंसा, शांति, यश, धर्म, गौरव, सत्य)

(इ) इन शब्दों के बीच का अंतर समझिए और स्पष्ट कीजिए। ऐसे ही तीन शब्द लिखिए।

गहरा - गहराई	स्वतंत्र - स्वतंत्रता
ऊँचा - ऊँचाई	परतंत्र - परतंत्रता
लंबा - लंबाई	नैतिक - नैतिकता
अच्छा - अच्छाई	धार्मिक - धार्मिकता

परियोजना कार्य

सोहनलाल द्विवेदी के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए। उनकी कोई एक कविता ढूँढ़कर लिखिए।

सपने देखिए और उन्हें साकार कीजिए।
- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

© SCERT not to be republished

5 फुटबॉल

प्रश्न

1. चित्र के बारे में बताइए?
2. अपने मन पसंद कुछ खेलों के नाम बताइए?
3. खेलों से क्या लाभ है?

उद्देश्य

खेल हमारे जीवन का अनोखा अंग है। खेलों से मनोरंजन होता है। मानसिक व शारीरिक विकास भी होता है। खेलों से अनुशासन व नियमों का पालन करने की प्रेरणा भी मिलती है। खेल में खेल भावना के साथ-साथ सहयोग, सहनशीलता, नेतृत्व, अनुशासन आदि की भावना होती है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
2. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
3. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

फुटबॉल प्रायः हमारे सभी स्कूलों में खेला जाता है। फुटबॉल मिला और लेकर खेलने निकल गये। यों भी हम लोग वॉलीबाल तो खेलते ही आये हैं। इस तरह खेलते-खेलते फुटबॉल भी खेलने का शौक पैदा हो गया और फुटबॉल मेरा प्रिय खेल बन गया।

क्या दिन, क्या रात, क्या खेत, क्या मैदान, जब समय मिला, मैं हूँ और मेरा फुटबॉल। शुरू-शुरू में तो मैं अकेला ही फुटबॉल खेलता रहा। तब यह मेरे लिए खिलौना था। बाद में मालूम हुआ कि यह तो सबकी चीज़ है। अनोखी चीज़ है। हाँ! फुटबॉल सबकी चीज़ है। दो टीमें खेलती हैं। हज़ारों लोग देखते हैं।

फुटबॉल का खेल अकेले एक आदमी का खेल नहीं। यह टीम का खेल है, मिलजुलकर खेलने का खेल है, यह ताकत और सावधानी का खेल है, यह फुर्ती और चुस्ती का खेल है, यह नज़र का खेल है। फुटबॉल पर नज़र, साथियों पर नज़र, विपक्षियों पर नज़र, गोल पर नज़र, लाइन पर नज़र, समय पर नज़र, अपने पर नज़र। यह ऐसा खेल है जिसमें एक की ताकत सबकी ताकत है और एक की कमज़ोरी सबकी कमज़ोरी है।

© NCERT not to be republished

फुटबॉल सचाई का खेल है। यह प्रेम का खेल है। इसमें जो वैर-भाव रखे, वह खिलाड़ी नहीं। दो पक्ष हैं, एक जीतेगा और दूसरा हारेगा। इसमें नाराज़गी या वैर-भाव की क्या बात? इस बार हारोगे तो अगली बार जीतोगे। जीतने की कोशिश करो। विपक्षी अगर जीतता है तो उसके खेल को समझो और उसकी सराहना करो। अपनी हार से भी सीखो और अपनी जीत से भी सीखो।

आज तक मैंने किसी बड़ी टीम में नहीं खेला, पर एक दिन मैं अपने ही देश की किसी बड़ी टीम में ज़रूर खेलूँगा। यहीं नहीं, मैं बाहर भी खेलना चाहता हूँ। आज नहीं तो कल मेरी इच्छा ज़रूर पूरी होगी।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर सोचकर बताइए।

1. 'खेलों से मनोरंजन होता है।' अपने विचार बताइए।
2. अपने मनपसंद खेल के बारे में बताइए?

(आ) पाठ के आधार पर वाक्यों को सही क्रम दीजिए।

1. अपनी हार से भी सीखो और अपनी जीत से भी सीखो। ( )
2. शुरू-शुरू में तो मैं अकेला ही फुटबॉल खेलता रहा। ( )
3. मुझे बचपन से ही फुटबॉल खेलने में रुचि थी। (1)
4. बाद में मालूम हुआ कि यह तो सबकी चीज़ है। ( )

(इ) अनुच्छेद पढ़िए। भाव लिखिए।

खेल बच्चों के जीवन का अनोखा अंग है। इससे मानसिक और शारीरिक विकास होता है। खेलों से मानसिक थकान दूर होती है। जीवन परिश्रमी बनता है। शरीर स्वस्थ रहता है। इसलिए खेलों को अपने जीवन में महत्व देना अनिवार्य है।

(ई) इन प्रश्नों के उत्तर तीन वाक्यों में दीजिए।

1. फुटबॉल खेल में गोल रक्षक का क्या महत्व है?
2. किसी भी खेल में नेतृत्व भावना की क्या भूमिका होती है?

© SCERT not to be republished

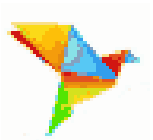

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. फुटबॉल खेल से किन गुणों का विकास होता है?
2. फुटबॉल खेल में गेंद कब्ज़े में आते ही क्या करना पड़ता है?
3. फुटबॉल कैसा खेल है?

(आ) 'फुटबॉल' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) किसी एक खेल के बारे में लिखिए।

(ई) 'हार-जीत खेल का एक हिस्सा है।' इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) वाक्य पढ़िए और भेद समझिए।

1. लड़का मैदान में फुटबॉल खेलता है।	- विधानार्थक वाक्य
2. आप मैदान में फुटबॉल खेलिए।	- आज्ञानार्थक वाक्य
3. हमें फुटबॉल खेलना चाहिए।	- इच्छार्थक वाक्य
4. समय मिलता तो हम फुटबॉल खेलते।	- संकेतार्थक वाक्य
5. लड़का मैदान में खेलता होगा।	- संदेहार्थक वाक्य
6. आप क्या खेलते हैं?	- प्रश्नार्थक वाक्य
7. वाह! फुटबॉल अच्छा खेल है।	- विस्मयार्थक वाक्य
8. सड़क पर फुटबॉल खेलना मना है।	- निषेधार्थक वाक्य

परियोजना कार्य

वर्ग-पहेली में खेलों के नाम छिपे हैं। उन्हें पहचानिए। किसी एक के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।

खो	क्रि	आ	क	टे
खो	के	हा	की	नि
फु	ट	बॉ	ल	स

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन और मस्तिष्क का निवास होता है।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

© NCERT not to be republished

6 बेटी के नाम पत्र

प्रश्न

1. चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?
2. बालक क्या कर रहा होगा?
3. हमारे जीवन में पत्रों का क्या महत्व है?

उद्देश्य

अपनी भावनाएँ दूसरों तक पहुँचाने के लिए पत्र भी एक साधन है। इस साधन के द्वारा समुचित व प्रभावी रूप से भावाभिव्यक्ति की जा सकती है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
2. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
3. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

© NCERT not to be republished

नैनी जेल,

26 अक्तूबर, 1930.

प्रिय इंदिरा,

जन्मदिन पर तुम्हें कई उपहार मिलते रहे हैं। शुभकामनाएँ भी दी जाती रही हैं। पर मैं इस जेल में बैठा तुम्हें क्या उपहार भेज सकता हूँ। हाँ, मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी।

क्या तुम्हें याद है कि 'जोन ऑफ आर्क' की कहानी तुम्हें कितनी अच्छी लगी थी? तुम स्वयं भी तो उसी की तरह बनना चाहती थी। पर साधारण पुरुष तथा स्त्रियाँ इतने साहसी नहीं होते। वे तो अपने प्रतिदिन के कामों, बाल-बच्चों तथा घर की चिंताओं में ही फँसे रहते हैं। परंतु एक समय ऐसा आ जाता है कि किसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी लोगों में असीम उत्साह भर जाता है। साधारण पुरुष वीर बन जाते हैं और स्त्रियाँ वीरांगनाएँ।

आजकल हमारे भारत के इतिहास का निर्माण हो रहा है। बापू ने भारतवासियों के दुखों को दूर करने के लिए आंदोलन छेड़ा है। मैं और तुम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि यह आंदोलन हमारी आँखों के सामने हो रहा है और हम भी इसमें कुछ भाग ले रहे हैं। एक महान उद्देश्य हमारे सामने है और इसकी पूर्ति के लिए बहुत कुछ करना है।

अब सोचना यह है कि इस महान आंदोलन में हमारा कर्तव्य क्या है इसमें हम किस तरह भाग लें परंतु जो कुछ भी हम

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

करें, हमें इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि उससे हमारे देश को हानि न पहुँचें। कई बार हम संदेह में भी पड़ जाते हैं कि हम क्या करें, क्या न करें। यह निश्चय करना कोई सरल कार्य नहीं है। जब भी तुम्हें ऐसा संदेह हो तो ठीक बात का निश्चय करने के लिए मैं तुम्हें एक छोटा-सा उपाय बताता हूँ। तुम ऐसा कोई काम न करना, जिसे दूसरों से छिपाने की इच्छा तुम्हारे मन में उठे। किसी बात को छिपाने की इच्छा तभी होती है, जब तुम कोई ग़लत काम करती हो। बहादुर बनो और सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। यदि तुम बहादुर बनोगी तो तुम ऐसी कोई बात नहीं करोगी, जिससे तुम्हें डरना पड़ें या जिसे करने में तुम्हें लज्जित होना पड़ें।

तुम्हें यह तो मालूम ही है कि बापू जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता का जो आंदोलन चलाया जा रहा है उसमें छिपा रखने जैसी कोई बात नहीं है। हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं। अच्छा बेटी। अब विदा।

भारत की सेवा के लिए तुम बहादुर सिपाही बनो, यही मेरी शुभकामना है।

तुम्हारा पिता,
जवाहर लाल।

© SCERT not to be republished

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर सोचकर दीजिए।

1. पुराने समय में पत्र कैसे भेजे जाते थे?

2. विविध उत्सवों व शुभसंदर्भों पर शुभकामनाएँ कैसे दी जाती हैं?

(आ) पाठ पढ़िए। उत्तर दीजिए।

1. **वाक्यों को जोड़कर सही वाक्य लिखिए।**

क. बापूजी के नेतृत्व में	इतिहास का निर्माण हो रहा है।
ख. आजकल हमारे भारत के	स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था।
ग. साधारण पुरुष वीर और	उजाले में करते हैं।
घ. हम तो सभी काम दिन के	स्त्रियाँ वीरांगनाएँ बन सकती हैं।

2. **गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

एक बार मेरे पिताजी 'श्रवण की पितृभक्ति' नामक पुस्तक खरीद कर लाये। मैंने उसे बड़े चाव से पढ़ा। उन दिनों बाइस्कोप में तस्वीर दिखानेवाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अपने माता-पिता को बहंगी पर बिठाकर ले जानेवाले श्रवण कुमार का चित्र भी देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। मन-ही-मन मैंने ठान लिया कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक भी देखा था। बार-बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चंद्र के सपने आते। यह बात मेरे मन में बैठ गयी। चाहे हरिश्चंद्र की भाँति कष्ट क्यों न उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

प्रश्न 1. सेवाभाव की प्रेरणा महात्मा गाँधी को कैसे मिली?

2. सत्य की प्रेरणा महात्मा गाँधी को किससे मिली?

3. इस गद्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?

© SCERT not to be republished

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

1. **नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

   1. यह पत्र किसने, किसको, कहाँ से लिखा?
   2. नेहरू जी ने अपनी बेटी को निडर और साहसी बनने का क्या उपाय बताया?
   3. ''मैं और तुम बहुत भाग्यशाली हैं।'' नेहरू जी ने ऐसा क्यों कहा?

भाषा की बात

(अ) नीचे दिये गए एकवचन और बहुवचन के रूप समझिए।

उपहार - उपहार	पुस्तक-पुस्तकें
लडका - लड़के	शुभकामना-शुभकामनाएँ
कवि - कवि (कविजन)	समिति- समितियाँ
पक्षी -पक्षी (पक्षीवृंद)	कहानी- कहानियाँ
गुरु-गुरु (गुरुजन)	ऋतु- ऋतुएँ
भालू- भालू	बहू - बहुएँ

(आ) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से कीजिए।

(खेद, बधाई, शुभकामनाएँ, आशीर्वाद)

1. नानी ने अपनी नवासी को जीती रहो बेटी कहकर ..... दिया।
2. आपको जन्मदिन की .....।
3. खेल में आपकी जीत हुई इसके लिए आपको ..... हो।
4. रुकावट के लिए .....है।

परियोजना कार्य

बाल अधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त करके लिखिए।

जो पुस्तकें तुम्हें सबसे अधिक सोचने के लिए विवश करती हैं, वे तुम्हारी सबसे बड़ी सहायक हैं।

- पं. जवाहर लाल नेहरू

© SCERT not to be republished

उपवाचक

सम्मक्का-सारक्का जातरा

भारतीय संस्कृति विश्व में विशेष स्थान रखती है। यहाँ धर्म, जाति-पाँति, ऊँच-नीच और रंग का कोई भेद नहीं है। सभी लोग मिलजुलकर रहते हैं। इसका ही श्रेष्ठ उदाहरण है- सम्मक्का-सारक्का जातरा। यह एक जनजातीय मेला है। वरंगल जिले के ताडवाई मंडल के मेडारम गाँव में इसे धूम-धाम से मनाते हैं।

यह वरंगल से लगभग 110 किलोमीटर दूर है। ताड्वाई मंडल के घने जंगलों व पहाड़ों में स्थित मेडारम में इस ऐतिहासिक जातरा का आयोजन किया जाता है। विश्वास है कि समस्त जनजातीय लोगों की देवी सम्मक्का-सारक्का अत्यंत महिमावान हैं। विविध प्राँतों से लोग यहाँ पर आकर वन देवता के रूप में सम्मक्का-सारक्का की पूजा करते हैं। यह यहाँ की सबसे बड़ी जनजातीय जातरा है। यह जातरा पूरी तरह से जनजातीय रीति-रिवाजों के अनुसार आयोजित की जाती है।सन् 1996 में आंध्र प्रदेश राज्य सरकार ने इस जातरा को राज्य त्यौहार के रूप में गौरवान्वित किया।

12वीं शताब्दी में तत्कालीन करीमनगर जिले के जगित्याल प्रांत के पोलवासा के जनजातीय शासक मेडराजू की इकलौती पुत्री सम्मक्का का विवाह मेडारम के शासक पगिडिद्दा राजू के साथ हुआ। इस दंपति को सारलम्मा (सम्मक्का), नागुलम्मा और जंपन्ना नामक तीन संतान हुईं। राज्य विस्तार की आकांक्षा से काकतीय नरेश प्रथम प्रतापरुद्र ने पोलवासा पर आक्रमण किया था। उनके आक्रमण के कारण मेडराजू मेडारम से भागकर अज्ञात में रहने लगे। मेडारम के शासक कोया जाति के नरेश पगिडिद्दा राजू काकतीय सामंत के रूप में रहने लगे। किंतु अकाल के कारण वे काकतीय नरेश को कर देने में विफल हुए। काकतीय नरेश इस पर नाराज़ हो गए। अतः प्रथम प्रतापरुद्र ने अपने महामंत्री युगंधर के साथ माघ पूर्णिमा के दिन मेडारम पर आक्रमण कर दिया।

सांप्रदायिक ढंग से अस्त्र-शस्त्र धारण कर पगिडिद्दा राजू सम्मक्का, सारक्का, नागुलम्मा, जंपन्ना, गोविंदराजू अलग-अलग प्रांतों से गोरिला युद्ध आरंभ कर वीरता से लड़ते हैं। किंतु प्रशिक्षित

और बहुसंख्यक काकतीय सेना के आक्रमण से मेडराजू, पगिडिद्दा राजू, सारलम्मा, नागुलम्मा, गोविंदराजू युद्ध में वीरगति प्राप्त करते हैं। जंपन्ना संपेंगा नहर के जल में समाधि लेते हैं। तभी से संपेंगा वागु (छोटी नदी) जंपन्ना वागु के नाम से प्रसिद्ध हो गई। इन सब घटनाओं से क्रुद्ध सम्मक्का काकतीय सेना पर रणचंडी के समान टूट पड़ती है और वीरता के साथ युद्ध करती है। जनजातीय स्त्री की युद्ध कला देखकर प्रतापरूद्र आश्चर्यचकित हो जाते हैं। कहा जाता है कि अंत में शत्रुओं के हाथों घायल सम्मक्का युद्ध भूमि से चिलुकल गुट्टा की ओर जाती हुई अदृश्य हो जाती है। उसकी खोज में गयी सेना को उस प्रांत में बांबी के पास हल्दी, कुंकुम की भरिणी मिलती है। उसी को सम्मक्का मानकर उस दिन से हर दो साल में एक बार माघ पूर्णिमा के दिन सम्मक्का-सारक्का जातरा बड़े ही वैभव के साथ आयोजित की जाती रही है।

जातरा के पहले दिन कन्नेपल्ली से सारलम्मा की सवारी लायी जाती है। दूसरे दिन चिलुकल गुट्टा में भरिणि के रूप में सम्मक्का को प्रतिष्ठापित किया जाता है। देवी की प्रतिष्ठापना के समय भक्तजनों की भीड़ उमड़ पड़ती है। यह भीड़ किसी कुंभ मेले से कम नहीं होती। इसीलिए इस जातरा को राज्य का कुंभमेला कहा जाता है। तीसरे दिन दोनों माता देवियों को आसन पर प्रतिष्ठापित करते हैं। चौथे दिन देवियों का आह्वान होता है। पुनः दोनों देवियों को युद्ध स्थल की ओर ले जाया जाता है। पारंपरिक तौर से चले आ रहे जनजातीय पुरोहित ही यहाँ के पुरोहित होते हैं। अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कामना करते भक्तजन देवी को सोना (गुड़) नैवेद्य रूप में चढ़ाते हैं। इस जातरा का इतिहास लगभग नौ सौ वर्ष पुराना है। प्रतिवर्ष भक्तों की संख्या और इसकी ख्याति बढ़ती ही जा रही है। इस जातरा से सामाजिकता और देश के प्रति अपने आपको समर्पित करने की भावना जागृत होती है।

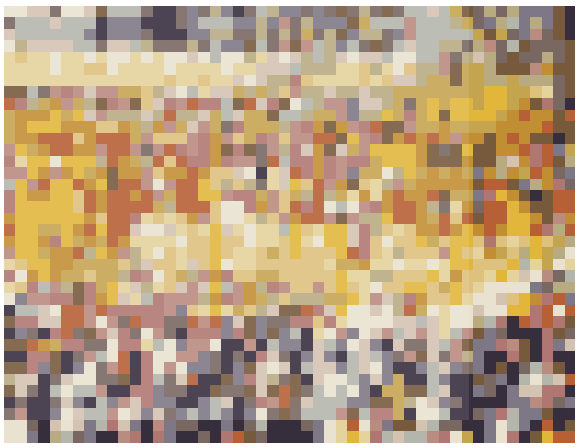

प्रश्न

1. आंध्र प्रदेश सरकार ने सम्मक्का-सारक्का जातरा को किस तरह गौरवान्वित किया?
2. इस जातरा को आंध्र प्रदेश का कुंभमेला क्यों कहा जाता है?
3. सम्मक्का-सारक्का के जीवन से क्या संदेश मिलता है?

© SCERT not to be republished